पद ८

(राग: भैरवी - ताल: त्रिताल)

सेवा। भजन हें कानी पड़ो पड़ो रे।।१।। माणिक म्हणे प्रभु अन्यथा

वदतां। जिव्हा ही समूळ झडो झडो रे।।२।।

प्रीति या पायीं जडो जडो रे प्रभू।।ध्रु.।। घडो तरी मजला साधूची